09 / 03 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

मेहनत समाप्त कर निरन्तर योगी बनने का अनुभव

➢➢ मैं पवित्र और योगी आत्मा हूँ...

➳ _ ➳ मधुबन की ऊँची पहाड़ियों पर बाबा की याद में बैठी मैं आत्मा..

→ दिल से सिर्फ एक ही अनहद साज बज रहा है..

■ बाबा, बाबा, बाबा..

➳ _ ➳ सामने खड़े हैं दिलाराम बाबा..

→ मेरे दिल की लगन को देख हर्षित होते हुए..

→ मुझे अपने गले लगाते हुए..

→ अपने नयनों में मुझे समाए हुए..

→ अपने दिलतख़्त पर बिठाते हुए..

→ सुख, शांति, पवित्रता की किरणों को बरसाते हुए..

→ अपने वर्से की अधिकारी बनाते हुए..

→ सर्व प्राप्तियों के भंडार की चाबी देते हुए..

→ माला के मणके में मुझे पिरोते हुए..

→ पवित्र भव, निरंतर योगी भव का वरदान देते हुए..

➳ _ ➳ मैं आत्मा निरंतर एकरस अवस्था में स्थित हूँ. .

→ एक की लगन में मगन हूँ

→ सदा योगयुक्त रह अपने विघ्नों को खत्म कर रही हूँ..

■ सारी अपवित्रता अंश सहित भस्म हो रहा है..

→ प्राप्तियों के नशे और ख़ुशी में नाच रही हूँ..

→ सम्पूर्ण पवित्र और सहजयोगी बन रही हूँ..

➢➢ सदा अपने सम्पन्न स्वरुप की अवस्था में रहती हूँ...

➳ _ ➳ मैं सदा स्लोगन याद रखती हूँ-

→ मैं एक श्रेष्ठ आत्मा बालक सो मालिक हूँ...

→ सर्व खज़ानें की अधिकारी हूँ..

→ सम्पन्न बाप की संतान हूँ..

→ सागर की बच्ची हूँ..

→ मैं ब्राह्मण सो देवता हूँ..

→ सर्व भंडार और खानों की मालिक हूँ..

→ मैं दिलखुश आत्मा हूँ..

■ मुझे किसी से भी अब कुछ भी मांगने की जरूरत नहीं

- जो पाना था वह पा लिया..
  - अब खोना नहीं है..

➢➢ बिना मेहनत निरंतर योगी बन रही हूँ...

➳ _ ➳ मीठे बाबा ने अपना बनाकर मुझे मेहनत से छुड़ा दिया..

→ बाबा ने करोड़ों आत्माओं में से मुझे चुना..

→ मुझ आत्मा की बुझी हुई ज्योति को जगाया..

→ मेरे भाग्य के सितारे को

- आसमान की बुलंदियों पर चमकाया..

→ नई दुनिया के लिए नया ज्ञान देकर

- नए और निराले संगमयुग में लाकर
- नया जीवन दे दिया..

➳ _ ➳ मैं अनुभवीमूर्त आत्मा हूँ..

→ ज्ञान के एक-एक प्वाइंट का स्वरुप बन रही हूँ

→ सदा स्मृति स्वरुप बन विजय प्राप्त कर रही हूँ..

→ हर कल्प मैंने ही अपना श्रेष्ठ हीरो पार्ट बजाया है

- और सफलता को प्राप्त किया है..

→ सदा निश्चिन्त रहती हूँ की स्वयं भगवान जब मेरे साथ है

- तो मेरी विजय तो निश्चित ही है..

→ सदा दिलाराम बाप की दिलरुबा बन

- उनके प्रेम में लवलीन रहती हूँ..
- बाबा के दिल के समीप रहती हूँ..

→ मुझे योग लगाने की मेहनत नहीं करनी पड़ती है..

- सहज ही योगयुक्त रहती हूँ..
- निरंतर और सहजयोगी बन रही हूँ..